विचार बिन्दु

विश्व की सर्वश्रेष्ठ कला, संगीत व साहित्य में भी कमियाँ देखी जा सकती है लेकिन उनके यश और सौंदर्य का आनंद लेना श्रेयस्कर है।

–श्री परमहंस योगानंद

राजस्थानी कला एवं संस्कृति: चुनौतियां और संरक्षण की पुकार

राजस्थान, भारत का वह रंगीन राज्य है जहाँ रेगिस्तान की सुनहरी रेत पर बिखरी कला और संस्कृति की धरोहर सदियों से चमक रही है। यहाँ की कला केवल चित्रकारी या शिल्प नहीं, बल्कि जीवन का आधार है एक ऐसी धुरी जो समाज को जोड़ती है, पहचान देती है और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती है। लेकिन सवाल उठता है:– राजस्थान में कला एवं संस्कृति के महत्व को कौन समझेगा? क्या वे समझेंगे जो आधुनिकता के नाम पर परंपराओं को भूलते जा रहे हैं? क्या वे जो विकास के बहाने धरोहर को कुर्बान कर देते हैं? या फिर वे ही जो इस मिट्टी से जुड़े हैं, जिनके खून में राजस्थानी संस्कृति का रंग घुला है? यह आलेख इसी प्रश्न की गहराई में उतरता है, राजस्थान की कला–संस्कृति के महत्व को उजागर करता है और बताता है कि इसे नजरअंदाज करना राज्य के भविष्य के लिए कितना घातक है।

राजस्थान की कला एवं संस्कृति की जड़ें इतिहास की मिट्टी में गहरी धंसी हैं। यहाँ के राजपूत राजाओं ने किलों, महलों और हवेलियों के माध्यम से अपनी कला को अमर कर दिया। जयपुर का हवा महल, उदयपुर का सिटी पैलेस, जोधपुर का मेहरानगढ़ किला ये केवल पत्थर के ढांचे नहीं, बल्कि जीवंत कला के प्रतीक हैं। इनकी दीवारों पर उकेरी गई जटिल नक्काशी, रंगीन फ्रेस्को चित्रकला और आभूषणों जैसी शिल्पकला राजस्थान की समृद्धि और कल्पनाशीलता का प्रमाण है। मिनिएचर पेंटिंग्स, जो मुगल काल से प्रभावित हैं, प्रेम, युद्ध, प्रकृति और धार्मिक कथाओं को जीवंत करती हैं। उदाहरणस्वरूप, बूंदी और किशनगढ़ शैली की चित्रकलाएँ इतनी कोमल हैं कि वे राधा–कृष्ण के प्रेम को कैनवास पर उतार देती हैं। लेकिन क्या आज का राजस्थानी युवा इनकी गहराई समझता है? शहरीकरण के दौर में ये चित्र संग्रहालयों की धूल में सिमटते जा रहे हैं, जबकि इनमें जीवन दर्शन छिपा है धैर्य, संघर्ष और सौंदर्य का समन्वय।

संस्कृति के बिना कला अधूरी है। राजस्थान की लोक संस्कृति त्योहारों, नृत्यों और संगीत में सांस लेती है। तीज, गणगौर, दीपावली जैसे पर्व केवल उत्सव नहीं, बल्कि सामूहिक एकता के प्रतीक हैं। घूमर नृत्य की घूंघट वाली महिलाएँ रेगिस्तान की कठोरता में कोमलता का संदेश देती हैं। कालबेलिया नृत्य, जो यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर में शामिल है, सर्पिल चालों और माँ सरस्वती को समर्पित लोकगीतों से भरा है। मांडणा, जो दीवारों पर चावल के आटे से बनाई जाती है, ग्रामीण महिलाओं की रचनात्मकता का प्रतीक है। ये सभी तत्व राजस्थानी संस्कृति को जीवंत रखते हैं। लेकिन महत्व का प्रश्न यहाँ आता है: क्या सरकारी योजनाएँ इनकी रक्षा कर पा रही हैं? पर्यटन विभाग तो इन्हें बेच रहा है, पर मूल भावना को कौन संरक्षित करेगा? बाहर से आने वाले पर्यटक फोटो खींचकर चले जाते हैं, लेकिन स्थानीय कलाकार भुखमरी के कगार पर हैं। एक सर्वे के अनुसार, राजस्थान के 70 प्रतिशत पारंपरिक शिल्पकारों की आय घट रही है, क्योंकि बाजार में चीनी नकली सामान हावी हो गया है।

कला एवं संस्कृति का आर्थिक महत्व भी कम नहीं। राजस्थान पर्यटन पर निर्भर अर्थव्यवस्था का केंद्र है, जहाँ कला ही मुख्य राजस्व स्रोत है। बाँसवाड़ा के चित्रकला, जयपुर की ब्लॉक प्रिंटिंग, जोधपुर की लकड़ी की नक्काशी और बीकानेर की मिनिएचर पेंटिंग्स विश्वविख्यात हैं। ये शिल्प करोड़ों का कारोबार करते हैं। राष्ट्रीय हस्तशिल्प मेला या पुष्कर मेला जैसे आयोजन हजारों कलाकारों को रोजगार देते हैं। लेकिन कौन समझेगा कि यदि ये कला लुप्त हो गईं, तो लाखों परिवार सड़क पर आ जाएँगे? हाल के वर्षों में, कोविड महामारी ने साबित कर दिया कि जब पर्यटन ठप होता है, तो कला पर पहला प्रहार पड़ता है। तब सरकार ने राजस्थान स्टूडियो जैसी योजनाएँ शुरू कीं, पर वे पर्याप्त नहीं। सच्चा महत्व तब समझ आएगा जब हम कला को उद्योग से जोड़ेंगे डिजाइनर ब्रांड्स के साथ साझेदारी, ई–कॉमर्स पर वैश्विक बाजार। राजस्थान सरकार की राज–रिको जैसी संस्थाएँ शिल्पकों को प्रशिक्षण दे रही हैं, लेकिन प्रशिक्षण के बाद बाजार तक पहुँच कौन सुनिश्चित करेगा?

भविष्य की चुनौतियाँ स्पष्ट हैं। जलवायु परिवर्तन रेगिस्तान को प्रभावित कर रहा है, जिससे पारंपरिक रंग और सामग्री प्रभावित हो रही हैं। शहरीकरण ने हवेलियों को होटल बना दिया, लेकिन उनकी कला को संरक्षित कौन करेगा? वैश्वीकरण में चीनी सामान ने स्थानीय बाजार छीन लिया। फिर भी आशा है। एनजीओ जैसे उषा किरण और क्राफ्ट्स काउंसिल ऑफ राजस्थान शिल्पकारों को सशक्त बना रहे हैं। युवा उद्यमी ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स पर राजस्थानी कला बेच रहे हैं।

सामाजिक स्तर पर कला एवं संस्कृति राजस्थान की पहचान हैं। यहाँ की बोली–मारवाड़ी, शेखावाटी, मेवाड़ी लोकगीतों में बसी है। कबीर, मीरा और अन्य संतों की वाणी आज भी भजन–कीर्तनों में गूँजती है। पुष्कर का ऊँट मेला या जैसलमेर का डेजर्ट फेस्टिवल इन परंपराओं को जीवित रखते हैं। ये आयोजन न केवल सामाजिक एकता लाते हैं, बल्कि लैंगिक समानता को भी बढ़ावा देते हैं। घूमर और गैर नृत्यों में महिलाएँ मुख्य भूमिका निभाती हैं, जो रूढ़िवादी समाज में सशक्तिकरण का प्रतीक है। पर्यावरण के प्रति जागरूकता भी कला से जुड़ी है भगोरिया मेले में प्रकृति पूजा या रेगिस्तानी लोककथाएँ जल संरक्षण सिखाती हैं। लेकिन आधुनिकीकरण के नाम पर ये परंपराएँ विलुप्त हो रही हैं। शहरी युवा बॉलीवुड पर झूम रहा है, जबकि लोक संगीत भूल रहा है। कौन समझेगा कि संस्कृति के बिना पहचान खो जाएगी? राजस्थान की 80 प्रतिशत आबादी ग्रामीण है, जहाँ कला ही शिक्षा का माध्यम है। स्कूलों में लोककला को पाठ्यक्रम में शामिल करने से बच्चे अपनी जड़ों से जुड़ेंगे।

शिक्षा और नैतिक मूल्यों के संदर्भ में कला का महत्व अपार है। राजस्थान के शिल्प जैसे बंधेज, लहरिया और साफा बनाना केवल हुनर नहीं, बल्कि अनुशासन सिखाते हैं। एक बंधेज साड़ी बनाने में महीनों लगते हैं, जो धैर्य का पाठ पढ़ाती है। कठपुतली कला, जो भीलवाड़ा और उदयपुर में प्रचलित है, रामायण–महाभारत की कथाएँ सुनाती है, जो नैतिकता का संदेश देती हैं। संगीत की राग–रागिनियाँ भावनाओं को शांत करती हैं। लेकिन आज डिजिटल युग में ये कला स्क्रीन पर सिमट रही हैं। सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो तो बनते हैं, पर मूल शिल्पकार को श्रेय कौन देता है? शिक्षा विभाग को चाहिए कि कलामंदिर जैसे केंद्र स्थापित करे, जहाँ बच्चे कला सीखें। इससे न केवल बेरोजगारी कम होगी, बल्कि सांस्कृतिक निरंतरता बनी रहेगी।

भविष्य की चुनौतियाँ स्पष्ट हैं। जलवायु परिवर्तन रेगिस्तान को प्रभावित कर रहा है, जिससे पारंपरिक रंग और सामग्री प्रभावित हो रही हैं। शहरीकरण ने हवेलियों को होटल बना दिया, लेकिन उनकी कला को संरक्षित कौन करेगा? वैश्वीकरण में चीनी सामान ने स्थानीय बाजार छीन लिया। फिर भी आशा है। एनजीओ जैसे उषा किरण और क्राफ्ट्स काउंसिल ऑफ राजस्थान शिल्पकारों को सशक्त बना रहे हैं। युवा उद्यमी ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स पर राजस्थानी कला बेच रहे हैं। सरकार की एक जिला एक उत्पाद योजना भी सहायक है। लेकिन महत्वपूर्ण है जागरूकता। राजस्थानी समाज को खुद आगे आना होगा–स्कूलों में कला उत्सव, कॉलेजों में वर्कशॉप्स। राजनीतिक नेता भी इसे प्रचार का साधन न बनाएँ, बल्कि नीतिगत समर्थन दें।

अंत में, राजस्थान में कला एवं संस्कृति के महत्व को वही समझेगा जो इस मरुस्थल की गहराई जानता है। यह केवल सौंदर्य नहीं, बल्कि अस्तित्व का प्रश्न है। यदि हमने इसे संरक्षित नहीं किया, तो आने वाली पीढ़ियाँ केवल किताबों में पढ़ेंगी कि कभी राजस्थान रंगों का संसार था। आज ही संकल्प लें कला को अपनाएँ, संस्कृति को जियें। क्योंकि राजस्थान की आत्मा यही है। कौन समझेगा? हम सब समझेंगे, यदि इच्छाशक्ति हो।

–अतिथि संपादक,
अविनाश जोशी,
वरिष्ठ पत्रकार एवं कॉरपोरेट सलाहकार

"रील इज रियल" : केन्द्रीय और राज्य बजट ने ऑरेंज इकोनॉमी को बड़ा बूस्ट दिया

2030 तक 20 लाख प्रशिक्षित युवाओं को इस सेक्टर में रोजगार के अवसर मिलने लगेंगे

ब्रजेश सामरिया

केन्द्र और राजस्थान के वर्ष 2026–27 के बजट से देश के सबसे बड़े क्रिएटिव टैलेंट मूवमेंट को जबरदस्त बढ़ावा मिला है। केन्द्रीय बजट में की गई घोषणा के अनुसार मुंबई स्थित इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ क्रिएटिव टैक्नोलॉजी (आईआईसीटी) देशभर में 15,000 माध्यमिक विद्यालयों और 500 कॉलेजों में एवीजीसी (एनिमेशन, विजुअल इफेक्ट्स, गेमिंग और कॉमिक्स) कंटेंट क्रिएटर्स लैब स्थापित करेगा ताकि इस सेक्टर में वर्ष 2030 तक आवश्यक 20 लाख पेशेवरों की मांग पूरी की जा सके। इस घोषणा को राजस्थान बजट 2026–27 की ड्रीम (डिजिटल रेडीनेस एंड एम्पावरमेंट थ्रू असिस्टेड मेंटरिंग) घोषणा से सुसंगत कर देखे तो इस सेक्टर के उभरते महत्व को समझने में मदद मिलगी। इसके अन्तर्गत आगामी वर्ष प्रथम चरण में लगभग 50 हजार विद्यार्थियों को डिजिटल साक्षरता से आगे जाकर डिजिटल सक्षम बनाया जाएगा। 2008 में आई छोटा भीम के पात्रों पर आधारित कैफे चैन शुरू होने जा रही हैं। नितेश तिवारी निर्देशित रामायण मूवी के 2 पार्ट के कुल बजट 4000 करोड़ रूपये का 40 प्रतिशत से अधिक हिस्सा वीएफएक्स, एआई डबिंग, संगीत का है, ये सब ऑरेंज इकोनॉमी के पार्ट हैं।

इस सेक्टर की महत्ता समझने के लिए हमें 12 जनवरी, 2026 की ओर लौटना होगा। स्थान था, भारत मण्डपम, जहाँ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 'विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग 2026' को संबोधित कर रहे थे। उस सत्र में प्रधानमंत्री ने भारतीय एवीजीसी उद्योग से इस उभरते हुए वैश्विक क्षेत्र की अपार संभावनाओं को चुनौती के रूप में लेकर अवसर मानने और सफल होने का आव्हान किया। उन्होंने कहा कि बजरंगबली जैसे चरित्र अकेले ही मारियो, हीमैन या सुपरमैन जैसे कई स्थापित वैश्विक पात्रों के संयुक्त दर्शक, पाठक या गेम्स प्लेयर्स से ज्यादा उपलब्धि हासिल कर सकते हैं। मोदीजी का विजन है कि भारत को वैश्विक एवीजीसी उद्योग का न केवल बड़ा स्टैकहोल्डर बनना है, उसे विश्व का नेतृत्व करना चाहिए।

विशेषज्ञों और उद्योग संगठनों का अनुमान है कि वैश्विक गेमिंग उद्योग 2030 तक 436 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुँच सकता है। यह केवल जीडीपी का विषय नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति को वैश्विक स्तर पर फैलाने का एक अभिनव माध्यम है। रामायण और महाभारत के पात्र मिकी माउस, मारियो या पिकाचू जैसे अंतरराष्ट्रीय पात्रों को सफलतापूर्वक चुनौती दे सकते हैं। भारत के लाखों गांवों, हजारों महलों–किलों की अनगिनत दु:खान्त, सुखान्त, प्रेम, वीरता, त्याग, बलिदान से सम्बंधित कहानियों को सैकड़ों मंचों और माध्यमों पर रोमांचक ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है।

मोदी युग में संचार केवल अर्थव्यवस्था और प्रचार तक सीमित नहीं है, बल्कि युवाओं के सशक्तीकरण, विकसित भारत @2047 के लक्ष्य और भारतीय उत्पादों को वैश्विक पहचान दिलाने का एक महत्वपूर्ण साधन है। भारत की वैश्विक सॉफ्ट पावर में आध्यात्म, बुद्ध, गांधी, आयुर्वेद, गंगा, अहिंसा और योग के साथ अब गेमिंग भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने जा रहा है।

आर्थिक सर्वेक्षण 2025–26 के अनुसार, 2024 में ऑरेंज इकोनॉमी 100 अरब डॉलर से अधिक हो चुकी है और यह पर्यटन तथा शहरी सेवाओं में सकारात्मक प्रभाव डाल रही है। एनिमेशन और वीएफएक्स जैसे निर्यात–उन्मुख क्षेत्रों ने 2024 में लगभग 103 अरब रूपये का राजस्व अर्जित किया जबकि गेमिंग क्षेत्र ने मोबाइल प्लेटफॉर्म और डिजिटल भुगतान के बल पर लगभग 232 अरब रूपये का राजस्व प्राप्त किया।

ऑरेंज इकोनॉमी रचनात्मकता, संस्कृति और बौद्धिक संपदा पर आधारित अर्थव्यवस्था है, जहाँ मूल्य भौतिक वस्तुओं से नहीं बल्कि विचारों, ज्ञान और कलात्मक अभिव्यक्ति से पैदा होता है। इसका एक प्रमुख हिस्सा 'कंसर्ट इकोनॉमी' है, जिसमें बड़े स्तर के लाइव संगीत और मनोरंजन कार्यक्रम तथा उनसे जुड़े हॉस्पिटिलिटी, ट्रैवलिंग, टिकट बिक्री, लॉजिस्टिक्स, मीडिया, विज्ञापन और स्थानीय सेवाएँ शामिल हैं। वैश्विक स्तर पर लाइव संगीत कुल संगीत राजस्व का लगभग एक–तिहाई हिस्सा है। अमेरिका में 2019 में इसने 130 अरब डॉलर से अधिक का राजस्व और 9 लाख नौकरियाँ दीं जबकि ब्रिटेन में 2022 में संगीत पर्यटन ने 6.6 अरब पाउंड का योगदान दिया।

पश्चिमी देशों के मुकाबले भारत में कंसर्ट इकोनॉमी अभी शुरूआती चरण में है लेकिन युवा आबादी, बढ़ती आय, डिजिटल टिकटिंग प्लेटफॉर्म और बेहतर शहरी बुनियादी ढांचे के कारण यह तेजी से बढ़ रही है और भविष्य में युवाओं की जनसंख्या में अधिकता के बल पर भारत इसका स्वभाविक नेतृत्वकर्ता माना जा सकता है क्योंकि मुख्यत: वे ही क्रिएटर और ग्राहक हैं। सुव्यवस्थित अनुमतियाँ, स्पष्ट नियम, भीड़ प्रबंधन, बेहतर कनेक्टिविटी और प्रशासनिक समन्वय इसकी सफलता के लिए आवश्यक हैं। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा स्थापित लाइव इवेंट्स डेवलपमेंट सेल इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इस सेल ने बहुत कम समय में देशभर में इस क्षेत्र से जुड़े लोगों को उच्च स्तरीय एकल खिड़की जैसा मंच उपलब्ध करवाया है।

अगला चरण' पर्यटन और आतिथ्य–आतिथ्य उद्योग विश्व के सामने देश की छवि गढ़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पर्यटन क्षेत्र प्रति रूपये या डॉलर के निवेश पर विनिर्माण या सेवा सेक्टर की तुलना में अधिक रोजगार सृजित करता है। यह विशेष रूप से युवाओं तथा अर्द्ध–कुशल और अकुशल श्रमिकों के लिए अवसर प्रदान करता है। यह पर्यावरण की दृष्टि से सबसे सक्षम उद्योग माना जा सकता है।

भारत के पास अजंता–एलोरा, अयोध्या–वाराणसी और ताजमहल–लाल किला जैसे विश्वप्रसिद्ध स्थल हैं फिर भी विदेशी पर्यटकों की संख्या तुर्की, पोलैंड, सिंगापुर और थाईलैंड जैसे कम क्षेत्रफल वाले देशों से कम है। यह बुनियादी ढांचे और अन्य सुधारों की आवश्यकता को दर्शाता है। इस आवश्यकता को केन्द्रीय बजट 2026–27 पूरा करने का बड़ा प्रयास है।

बजट में 20 प्रमुख पर्यटन स्थलों के लिए 10,000 ट्यूरिस्ट गाइड को प्रशिक्षित करने, वन्यजीव, ट्रेकिंग और प्रकृति–आधारित पर्यटन को बढ़ावा देने की घोषणा की गई है। साथ ही, 3 आयुर्वेद एम्स और 5 क्षेत्रीय आयुष मेडिकल हब की स्थापना से मेडिकल टूरिज्म को बढ़ावा मिलेगा। भारत मेडिकल टूरिज्म के क्षेत्र में पहले से ही किफायत और उच्चतम स्टैंडर्स के चलते प्रतिष्ठित है।

ब्रजेश सामरिया, जनसंपर्क अधिकारी।

भारत का एआई उत्सव: एक नया वैश्विक अध्याय

डॉ. सुरेंद्रसिंह शेखावत

नई दिल्ली का भारत मंडपम फरवरी 2026 में सिर्फ एक जगह नहीं रहा–यह भारत की एआई महत्वाकांक्षा का जीवंत केंद्र बन गया। 16 फरवरी को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उद्घाटन के साथ शुरू हुआ इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026 अब तक के सबसे बड़े एआई आयोजनों में शुमार हो चुका है। सुबह से शाम तक लाखों उत्साही लोग, स्टार्टअप्स, वैश्विक सीईओ और सरकारी प्रतिनिधि यहां जुटे। एलईडी स्क्रीन्स पर चमकता संदेश पीपल, प्लैनेट, प्रोग्रेस हर किसी को याद दिलाता रहा कि यह सिर्फ तकनीक का मेला नहीं, बल्कि मानवता के भविष्य का उत्सव है।

यह समिट संख्या में भी अनोखा था। सरकारी आंकड़ों और मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, 2.5 लाख से अधिक रजिस्ट्रेशन हुए, इतना जनसैलाब कि पहले दिन ही भीड़ प्रबंधन चुनौतीपूर्ण हो गया। लेकिन यही भीड़ भारत की सफलता की सबसे बड़ी गवाही है। जहां पहले के वैश्विक एआई शिखर सम्मेलन–2023 का ब्लेचली पार्क, 2024 का सियोल और 2025 का पेरिस कुछ सौ चुनिंदा लोगों तक सीमित रहे, वहीं दिल्ली का यह मंच खुला, लोकतांत्रिक और जन–केंद्रित था। ब्लेचली में सुरक्षा और जोखिमों पर गंभीर चर्चा हुई, सियोल में नवाचार और स्वैच्छिक प्रतिबद्धताएं, पेरिस में निवेश और एक्शन पर फोकस। भारत ने इन सबको अपनाया, लेकिन पैमाना बढ़ाकर इसे वैश्विक दक्षिण का पहला बड़ा मंच बना दिया जहां 100 से अधिक देशों के प्रतिनिधि, 20 से ज्यादा राष्ट्राध्यक्ष, 60 से अधिक देशों के मंत्री और सैकड़ों टेक लीडर्स शामिल हुए।

प्रधानमंत्री मोदी ने उद्घाटन में स्पष्ट किया एआई भारत के लिए नहीं, पूरी दुनिया के लिए समाधान लाएगा। समिट में कई ठोस कदम सामने आए: इंडिया एआई मिशन के तहत मौजूदा 38,000 जीपीयू को 65 प्रति घंटा की सब्सिडी दर पर उपलब्ध कराना, जल्द ही 20,000 और जीपीयू जोड़ने की घोषणा, 22 भारतीय भाषाओं में स्वदेशी फाउंडेशन मॉडल्स का मजबूत समर्थन, स्टार्टअप्स के लिए वेंचर फंडिंग और कुल मिलाकर 10,300 करोड़ का विस्तारित बजट। ये कदम कंप्यूट की कमी को दूर कर रहे हैं जो एआई में असली कुंजी है। छोटे किसानों के लिए स्मार्ट कृषि, स्कूलों में व्यक्तिगत शिक्षा, दूर–दराज के गांवों में टेलीमेडिसिन ये अब सिर्फ प्रदर्शन नहीं, बल्कि वास्तविक उपयोग के उदाहरण बन रहे हैं।

भारत की रणनीति स्मार्ट और संतुलित है। अमेरिका–चीन के बीच चिप्स और नियंत्रण की कड़ी प्रतिस्पर्धा में भारत खुद को तटस्थ सेतु के रूप में पेश कर रहा है। यहां एआई को प्रभुत्व की बजाय प्रभाव की भाषा में देखा जा रहा है–गांव–गली तक पहुंचाने वाला विकास का औजार। 600 से ज्यादा स्टार्टअप्स, 13 देशों के पवेलियन, 300 प्रदर्शक और 30 देशों की भागीदारी ने इसे एक जीवंत एक्सपो में बदल दिया। सुंदर पिचाई, सैम ऑल्टमैन, डैरियो आमोदेई जैसे ग्लोबल लीडर्स यहां आए, जो भारत की बढ़ती ताकत का प्रमाण है।

कुछ लोग पहले दिन की भीड़, कतारों और कनेक्टिविटी की चुनौतियों को लेकर बात कर रहे हैं। लेकिन यही उत्साह भारत की ताकत दिखाता है। आधार और यूपीआई की शुरुआत में भी ऐसी ही अव्यवस्था थी, लेकिन आज वे दुनिया की मिसाल हैं। एआई में भी भारत पहले विस्तार करता है, फिर परिष्कार। यह साहस का मॉडल है–जो तेजी से बदलाव लाता है। समिट के दौरान एक्सपो को एक अतिरिक्त दिन तक बढ़ाना पड़ा, क्योंकि उत्साह थम ही नहीं रहा।

भारत की सॉफ्टवेयर प्रतिभा अब घर में रुक रही है। डेटा सेंटर्स में निवेश आ रहा है नंवीडिया , इंटेल , योटा जैसे नाम जुड़ रहे हैं। 20–50 बिलियन पैरामीटर वाले व्यावहारिक मॉडल्स प्रदर्शित हुए, जो लागत–दक्ष और बहुभाषी हैं। यह निर्भरता नहीं, साझेदारी है–जो रोजगार, क्षमता और स्वदेशी इकोसिस्टम को मजबूत करेगी। यह समिट चिंगारी है भविष्य का दांव, जो जीता जा चुका है। पैमाना गति पैदा करता है। लाखों लोगों को जोड़कर भारत एआई की ऐसी संस्कृति बना रहा है जो बंद कमरों से नहीं, खुले मंच से जन्म लेती है। अब अगला पड़ाव संस्थागत मजबूती का है मजबूत शोध केंद्र, विश्वस्तरीय कंप्यूट क्लस्टर और संतुलित नियामक फ्रेमवर्क।

भारत मंडपम में जो ऊर्जा दिखी, वह एक बेचैन राष्ट्र की थी ।सदी की सबसे बड़ी तकनीक में अपनी जगह बनाने की। मेले खत्म होते हैं, लेकिन संस्थाएं टिकती हैं। इस उत्सव की चिंगारी अगर अनुशासन में ढली जो निश्चित है। तो इतिहास इसे शुरुआत कहेगा। बैरिकेड अब सुरक्षा के नहीं, भारत की बढ़ती शक्ति के प्रतीक हैं।

भारत एआई में आगे बढ़ रहा है। यह हकीकत है। 22 भाषाओं का एआई, करोड़ों यूजर्स, विशाल डेवलपर कम्युनिटी और अब वैश्विक मंच–ये सब मिलकर भारत को ग्लोबल लीडर बना रहे हैं। पीपल, प्लैनेट और प्रोगेस सिर्फ नारा नहीं, भारत की एआई सोच है समावेशी, महत्वाकांक्षी और जन–केंद्रित। जब भारत इरादा करता है, तो पूरा करता है।

– डॉ. सुरेंद्रसिंह शेखावत,
भाजपा प्रदेश प्रवक्ता।

अलवर में दो आईएएस अधिकारियों ने सादगी से शादी की

अलवर, (निसं)। अलवर में दो आईएएस अधिकारी शादी के बंधन में बंधे। शादी में न बैंड बाजा था, न पंडित और न ही बाराती। दूल्हा और दुल्हन अपने परिवार वालो के साथ आए थे।

जानकारी के अनुसा अलवर एसडीएम माधव भारद्वाज और गुजरात के जाम नगर की एसडीएम अदिति वासने ने बुधवार को जिला कलेक्टर डॉ. अर्तिका शुक्ला के सामने अपनी शादी रजिस्टर्ड करवाई। माधव और अदिति 2023 बैच के आईएएस हैं। कलैक्टर के चैंबर में वर–वधू ने एक–दूसरे को माला पहनाई। शादी की खबर लगते ही कुछ ही देर में आसपास के कर्मचारी और अधिकारी कलैक्टर डॉ. अर्तिका शुक्ला के चैंबर में पहुंच गए। कलैक्टर के चैंबर में ही दोनों ने एक–दूसरे को वरमाला पहनाई। एसडीएम माधव भारद्वाज पुत्र राजकुमार भारद्वाज मूल रूप से मसूरी के रहने वाले हैं। एसडीएम अदिति वासने यूपी के बरेली की रहने वाली हैं।

अलवर एसडीएम माधव भारद्वाज और गुजरात के जामनगर की एसडीएम अदिति वासने विवाह बंधन में बंधे।

वर–वधू ने बताया कि दोनों की मुलाकात आईएएस ट्रेनिंग के दौरान हुई थी। इसके बाद एक–दूसरे को पसंद करने लगे और अब शादी की है। अदिति 2023 में पहले प्रयास में आईएएस में 57वीं रैंक लेकर आई थी। वे दिल्ली विवि के जीसस एंड मैरी कॉलेज से बीए ऑनर्स करने के बाद सिविल सेवा की तैयारी में लग गई थी। अब वे गुजरात के जाम नगर में प्रांत अधिकारी हैं। वहीं माधव भारद्वाज की 2023 में 536वीं रैंक आई थी। वे एनआईटी प्रयागराज से कंप्यूटर साइंस में बीटेक और आईआईएम अहमदाबाद से एमबीए की। उसके बाद माइक्रोसॉफ्ट कंपनी में नौकरी भी की। इसके साथ सिविल सेवा की तैयारी की थी। आईएएस ट्रेनिंग के समय अदिति व माधव की मुलाकात हुई थी।

■ शादी में न बैंड बाजा था, न पंडित और न ही बाराती, वहीं दूल्हा और दुल्हन अपने परिवार वालों के साथ आए थे

चूरू : निजी बस मालिकों की मनमानी से यात्री परेशान

चूरू, (कासं)। चूरू जिला मुख्यालय से आने–जाने वाली निजी बस मालिकों की मनमानी से यात्री परेशान हैं। यहां निजी बसों द्वारा यातायात के नियमों की खुलेआम धज्जियां उड़ाई जा रही है।

मिली जानकारी के अनुसार निजी बस मालिक यात्रियों से मनमाना किराया वसूलते हैं। इतना ही नहीं रूट कहीं का ले रखा है और चलते कहीं और मार्ग पर हैं। समय की भी कोई पाबंदी नहीं है। बस स्टैंड से चलकर कलेक्ट्रेट के पास खड़े हो जाते हैं फिर सीएम बहड़ सर्किल पर थम जाते हैं। उधर वाले फाटक के पास बस खड़ी कर देते हैं। कभी बारात लेकर चले जाते हैं तो यात्री बस का इंतजार ही करते रह जाते हैं। यात्रियों को बुरी तरह भर लेते हैं। बस की छत और केबिन में भी सवारियों को बैठा लेते हैं। चलती बस में चालक द्वारा मोबाइल पर बात करना और धूम्रपान करना तो आम बात है। कई तो शराब के नशे में भी बस को चलाते हुए देखे जा सकते हैं। कहने वाले यात्री से झगड़ा करने पर उतारू हो जाते हैं।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शुक्रवार 20 फरवरी, 2026

फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2082, उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र रात्रि 8:07 तक, साध्य योग सायं 6:23 तक, गर करण दिन 2:39 तक, चन्द्रमा आज मीन राशि में संचार करेगा।

गृह स्थिति: सूर्य–कुम्भ, चन्द्रमा–मीन, मंगल–मकर, बुध–कुम्भ, गुरू–मिथुन, शुक्र–कुम्भ, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह

आज राजयोग सूर्योदय से दिन 2:39 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग और अमृत सिद्धि योग रात्रि 8:07 से सूर्योदय तक है। रवियोग रात्रि 8:07 से आरम्भ होगा। भद्रा रात्रि 1:50 से आरम्भ होगी। आज पंचक है। आज राष्ट्रीय फाल्गुन मास आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 8:28 तक, लाभ–अमृत 8:28 से 11:16 तक, शुभ 12:41 से 2:05 तक, चर 4:54 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 7:03, सूर्यास्त 6:18

मेष

घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

वृष

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। आज अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

सिंह

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

कन्या

परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

तुला

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। दिनचर्या में सुधार होगा। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक

परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार हो सकता है। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

धनु

घर–परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त–व्यस्त हो सकती है। आज व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे।

कुंभ

व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

मीन

मानसिक तनाव से राहत मिल सकती है। मन:स्थिति में सुधार होगा। आज आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी।